विचार बिन्दु

महापुरुष वे ही होते हैं जो विभिन्न परिस्थितियों के रंगों में रंगे जाने के बाद भी अपने व्यक्तित्व की पहचान को खोने नहीं देते। –मुक्ता

बात सरकारी धन के अपव्यय की: एक विकल्प यह भी हो सकता है!

दिल्ली के मुख्य मंत्री के सरकारी आवास के सौंदर्यीकरण पर पैंतालीस करोड़ रुपये के खर्च का मुद्दा इन दिनों बहुत चर्चा में है। जहां उनके विरोधी इतनी बड़ी धनराशि के (अप) व्यय पर सवाल उठाते हुए उनकी आलोचना कर रहे हैं, वहीं मुख्य मंत्री जी के समर्थक यह कह कर सफाई दे रहे हैं कि 1942 में बना वह भवन जर्जर अवस्था में था, तीन बार उसकी छतें गिर चुकी थीं, अत: सुरक्षा की दृष्टि से उस पर इतना खर्चा करना ज़रूरी था। वे कहते हैं कि यह सौंदर्यीकरण न होकर नवीनीकरण है! अपनी बात को और वज़नदार बनाने के लिए वे अन्य राजनेताओं, जो ज़ाहिर है कि उनके दल से भिन्न दलों के ही हैं, द्वारा उनके निवास स्थानों पर हुए खर्च का ब्यौरा भी दे रहे हैं और गर्व से यह बता रहे हैं कि उनकी तुलना में हमारे नेता के सरकारी आवास पर तो कम ही खर्च हुआ है।

इन्हीं दिनों मीडिया पर दिल्ली के इन्हीं मुख्य मंत्री जी का एक पुराना वक्तव्य भी खूब देखा-सुना जा रहा है जिसमें वे कह रहे हैं कि मुझे चार पांच कमरों से ज़्यादा की ज़रूरत नहीं होगी।

इसी वक्तव्य में वे यह भी कह रहे हैं कि उनके मुख्य मंत्री बन जाने के बाद दिल्ली में लाल बत्ती की व्यवस्था किसी के लिए भी नहीं रहेगी। प्रकारांतर से वे सादगी पूर्ण जीवन शैली और वीआईपी संस्कृति के समूल उन्मूलन की बात कर रहे हैं। इस वीडियो के साथ आज के यथार्थ को देखकर स्वाभाविक ही है कि हम सबके होंठों पर एक व्यंग्यात्मक मुस्कान आ रही है।

हमारे देश में सादा जीवन उच्च विचार को एक आदर्श जीवन मूल्य माना जाता रहा है। जो लोग खानदानी रूप से वैभवशाली थे उन्होंने भी जनता में आने के बाद अपना वैभव त्याग कर सादा जीवन शैली को अपनाया। इस बात के अनगिनत उदाहरण याद किए जा सकते हैं। लेकिन इस बात की भी अनदेखी नहीं की जानी चाहिए कि हाल के बरसों में सादा जीवन वाली बात कहने भर को रह गई है। हरेक, लगभग हरेक ही, अपनी क्षमता का अतिक्रमण करते हुए चमक-दमक भरा जीवन जीने को लालायित नज़र आता है। यह सही है कि वैयक्तिक रूप से और अपने खर्चे पर कोई कैसी ज़िंदगी जीता है यह उसका निजी मामला है और हमें उस पर कोई टिप्पणी नहीं करनी चाहिए। दिल्ली के मुख्य मंत्री के बंगले पर हुए पैंतालीस करोड़ के खर्च के बहाने हम सार्वजनिक धन के इस तरह उपयोग पर सवाल उठा रहे हैं और ऐसा करने का हमारा पूरा हक़ है क्योंकि यह पैसा अंतत: हमारी गाढ़ी कमाई का है।

इस तरह की चर्चाएं अन्य राजनीतिज्ञों और अफसरों को लेकर भी आए दिन होती रहती हैं।

त्रिपुरा के माणिक सरकार (सीपीएम) जैसे एकाध अपवाद को छोड़ दें तो पाएंगे कि जो भी सत्ता में आता है वह उसके रंग में रंग जाता है। चुने जाने से पहले भले ही वह सादगी भरी जीवन शैली के कितने ही दावे क्यों न करे, आप पाते हैं कि कुर्सी उन सारे दावों को तार-तार कर देने में बहुत समय नहीं लगाती है। इस मामले में कोई राजनीतिक दल और कोई नेता दूसरों से अलग नहीं है। जो लोग अपनी ग़रीबी का बखान करके सत्ता में आते हैं वे भी कुछ ही बरसों बाद सर से पांव तक वैभव में लिपटे नज़र आते हैं। मज़े की बात यह कि इसके बाद भी उन्हें अपनी ईमानदारी का ढोल पीटने में कोई संकोच नहीं होता, जबकि उनकी जीवन शैली का उनकी आय के ज्ञात स्त्रोतों से कोई ताल मेल नहीं बैठता है।

इधर एक बड़ी गड़बड़ यह भी हुई है कि भारतीय जन मानस बुरी तरह हमारे-तुम्हारे में बंट गया है। हम सबकी आंखों पर ऐसे रंगीन चश्मे चढ़ गए हैं जो जिनसे ख़ुद का कुछ भी नज़र नहीं आता, दूसरों का सब कुछ नज़र आता है। जो लोग दिल्ली के मुख्य मंत्री के सरकारी आवास पर हो रहे इस बड़े खर्च को लेकर बयानबाज़ी कर रहे हैं वे ही लोग कभी दिल्ली सरकार के सरकारी विज्ञापनों पर होने वाले खर्चों पर भी खूब टिप्पणियां करते थे। यह अच्छी बात है कि आप ग़लत को ग़लत कहें। लेकिन यह बात और अच्छी होती, अगर आप अपने ग़लत पर भी एक नज़र डालते। अपने ग़लत की बात होती है तो जैसे मुंह में दही जम जाता है। दुर्भाग्य से यह चरित्र पहले नेताओं का था, अब आम जन का भी होने लगा है। हमारी सारी टिप्पणियां इस आधार पर निर्मित होती है कि हम जिसके बारे में बात कर रहे हैं वह अपना है या पराया है। यह दुर्भाग्यपूर्ण है।

> **यह एक दुखद सत्य है कि अब न हमारे नेता सादगी की बात करते हैं और न हम उनसे सादगी की अपेक्षा रखते हैं। इस बात को हमने बहुत सहज रूप से स्वीकार कर लिया है कि अगर वे बड़े हैं तो उनकी जीवन शैली भी बड़ी ही होगी। यह सवाल कभी हमारे मन में आता ही नहीं है कि इसका बोझ किसे ढोना पड़ रहा है।**

एक और बात। और मैं प्रार्थना करूंगा कि इस बात को सही परिप्रेक्ष्य में लिया जाए। और ज़्यादा स्पष्ट शब्दों में कहूं तो यह कि मैं दिल्ली के मुख्यमंत्री के इस खर्च को किसी भी तरह उचित नहीं ठहरा रहा हूं। लेकिन मैं कहना यह चाहता हूं कि अब सादगी की बात केवल बात रह गई है। हम अपने मुख्य मंत्री, मंत्री गण, नेताओं, जन प्रतिनिधियों, अफ़सरों आदि से सादगी की उम्मीद करते हैं लेकिन क्या हमारे अपने जीवन में कहीं सादगी बची है? क्या हम अपनी हैसियत से बाहर जाकर वैभव पूर्ण जीवन जीने का हर मुमकिन प्रयास नहीं करते हैं? यह तर्क न दें कि यह हमारा निजी मामला है। निजी एक तो इसलिए नहीं रह जाता है कि जब हम अपने आर्थिक स्त्रोतों से बाहर जाकर ऐसा करने का प्रयास करते हैं तो हम भ्रष्टाचार का सहारा लेते हैं, और तब वह हमारा निजी मामला नहीं रह जाता है। दूसरी बात यह कि इस तरह जो तड़क-भड़क और चमक दमक तथा वैभव के अश्लील और भोण्डे प्रदर्शन वाला समाज बनता जा रहा है, हमारे जन प्रतिनिधि और अफसर उस समाज से अलग कैसे हो सकते हैं? आखिर वे भी तो इसी समाज के अंग हैं। इसी समाज में सांस लेते हैं और इसी समाज से अपना खाद पानी ग्रहण करते हैं। कहने को तो यह भी कहा जा सकता है कि प्रजा तो राजा का अनुकरण करती है, अत: राजा को सादगी भरी जीवन शैली अपनानी चाहिए ताकि जनता भी वैसी ही जीवन शैली अपनाए। लेकिन यह बात कहने में जितनी आसान है, व्यवहार में उतनी नहीं है। सादगी के नाम पर हमारे पास साल का केवल एक दिन बचा है, दो अक्टोबर का, जब हम महात्मा गांधी और लाल बहादुर शास्त्री को याद करते हुए उनकी सादगी की कहानियां सुना कर अपने अपराध बोध को कम करने का थोड़ा-सा प्रयास करते हैं। वह प्रयास भी अब क्षीण होता जा रहा है। अब ऐसे नेताओं को याद करने का समय बीत चला है। अब तो हमारे चारों तरफ वे नेता हैं जो लाखों-करोड़ों बल्कि अरबों खर्च करके पीआर एजेंसियों की मदद से अपनी छवियां निर्मित करवाते और हम पर थोपते हैं। जब वे आने छवि निर्माण पर इतना खर्च करते हैं तो उनसे किस सादगी की उम्मीद की जाए?

यह एक दुखद सत्य है कि अब न हमारे नेता सादगी की बात करते हैं और न हम उनसे सादगी की अपेक्षा रखते हैं। इस बात को हमने बहुत सहज रूप से स्वीकार कर लिया है कि अगर वे बड़े हैं तो उनकी जीवन शैली भी बड़ी ही होगी। यह सवाल कभी हमारे मन में आता ही नहीं है कि इस बड़ी जीवन शैली का बोझ किसे ढोना पड़ रहा है। हुई होगी किसी ज़माने में कोई सरोजिनी नायडू जिसमें राष्ट्रपिता की सादगी पर उंगली उठाने की हिम्मत थी, आज कोई ऐसा करके तो देखे! आज सत्ता बहुत ताकतवर हो गई है। उसके पास हमारी आवाज़ को कुचलने के अनगिनत औज़ार हैं और उनका इस्तेमाल करने में उसे किसी तरह की कोई हिचकिचाहट भी नहीं है। यह हम आए दिन देखते हैं, और देखकर सबक भी लेते हैं कि अपनी जान की सलामती इसी में है कि चुप रहा जाए! दिल्ली अभी इतनी ताकतवर नहीं है इसलिए उस पर बात हो भी रही है। लेकिन वह भी इतनी तो बदली ही है कि जिसे कल तक अनुचित कहती थी आज उसी को करने में उसकी हिचकिचाहट ख़त्म हो चुकी है।

तो क्या हमें किसी भी सरकारी फिज़ूलखर्ची पर उंगली नहीं उठानी चाहिए? इस सवाल का एक जवाब तो यह है कि अगर आप अपनी उंगली की सलामती चाहते हैं तो उसे ज़हमत ही मत दीजिए। दूसरा यह कि आप उंगली उठाते रहिये, उसकी परवाह किसी को नहीं है। इन दोनों बातों से हटकर मैं एक बात और सोचता हूं। क्या यह सम्भव है कि जो हमारी सेवा कर रहे हैं–

मसलन जन प्रतिनिधि, नेता, अफ़सर वगैरह उन्हें एकमुश्त राशि वेतन के रूप में दे दी जाए और कहा जाए कि अपने सारे खर्चे वे ख़ुद वहन करें। मान लीजिए एक मुख्य मंत्री है। उसे बहुत बढ़िया वेतन दे दिया जाए। फिर वह जैसे चाहे वैसे बंगले में रहे, जितनी यात्रा करना चाहे और जैसी करना चाहे करे। उसकी सुरक्षा वगैरह की ज़रूरी व्यवस्था सार्वजनिक धन से हो, शेष सब उसके अपने स्तर पर हो। और यह भी हो कि चाहे कोई कितने ही बड़े पद पर हो उसके आधिकारिक और निजी कामों के बीच भेद किया जाए। आखिर क्यों कोई राजनेता हमारे खर्चे पर अपनी पार्टी का चुनाव प्रचार करे, यहां से वहां जाए, तीर्थाटन करे, भ्रमण करे, मौज मस्ती करे, सामाजिक रिश्तों का निर्वाह करे? उसे इनमें से कुछ भी करना है तो बाकायदा छुट्टी ले और अपने खर्चे पर करे! हमारे खर्चे पर वह केवल हमारा अर्थात जनता का काम करे!

क्या यह सम्भव लगता है? अगर नहीं तो क्यों नहीं?

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

मरू प्रदेश के लिए वरदान बनेगी पूर्वी राजस्थान नहर परियोजना

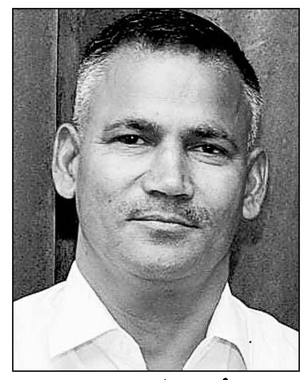

प्रकाश चंद्र शर्मा

जल है तो कल है– ये ऐसी कहावत है जो पृथ्वी पर जीवन के अस्तित्व के भविष्य को तय करेगी। पुरातत्व विज्ञानियों द्वारा खोजी गई लुप्त सभ्यताओं जैसे सिंधु घाटी सभ्यता (सिंधु नदी), आहड़ सभ्यता (बेड़च/बनास नदी) का विकास भी नदियों के किनारे ही हुआ। वर्तमान समय में भी जहां जहां पानी की विरलता है वहां वहां मनुष्य की आबादी भी विरल ही है और जहां जहां पानी की प्रचुरता है वहां वहां मानवीय बस्तियों की भी सघनता मिलती है। विकसित देशों की सरकारों ने अरबों खरबों डॉलर खर्च कर चंद्रमा और मंगल ग्रह पर मिशन भेजे हैं जिनका मुख्य उद्देश्य मंगल ग्रह और चंद्रमा पर जल की खोज करना है क्योंकि इन सब के मूल में है–जल ही जीवन है। देश के किसी भी कोने में जल पर चर्चा हो तो राजस्थान राज्य का नाम चिंता की लकीरों के रूप में लोगों के चेहरों पर परिलक्षित होता है।

मरू गंगा ने बदली मरू प्रदेश की तस्वीर : राजस्थान का लगभग 60 प्रतिशत भूभाग थार के मरुस्थल से घिरा हुआ है । मरुस्थल का मतलब ही जल की न्यूनतम उपलब्धता से है। लेकिन तत्कालीन सरकारों के लोक कल्याण की भावना और दृढ़ निश्चय से राजस्थान के उत्तर पश्चिम क्षेत्र मरू प्रदेश में 649 किलोमीटर लंबी इंदिरा गांधी नहर राजस्थान नहर के द्वारा चमत्कारिक बदलाव हुए हैं। रेत के समुद्र और बालू के टीलों पर अब हरी-भरी फसलें लहलहाने लगी हैं। यही कारण है कि इस नहर को मरू गंगा के नाम से भी ख्याति मिली है। वहीं दूसरी तरफ पूर्वी राजस्थान जो राज्य का मैदानी भूभाग है पिछले कुछ वर्षों से या तो सूखाग्रस्त रहा है या अतिवृष्टि की मार झेल रहा है । साल दर साल वर्षा जल की न्यूनता से पूर्वी राजस्थान के कुछ जिले सूखे की समस्या का सामना कर रहे हैं तो उसी समय में राज्य के हाड़ौती क्षेत्र में हुई अत्यधिक बरसात से पूर्वी राजस्थान के सवाईमाधोपुर, करौली और धौलपुर जिलों में बाढ़ के हालात पैदा हुए हैं। पूर्वी राजस्थान के कुछ जिलों में सूखा पड़ने और कुछ जिलों में बाढ़ आने से कृषि व उस पर आधारित उद्योग धंधे चौपट होते जा रहे हैं। इससे इन जिलों के निवासियों को जीविकोपार्जन हेतु पलायन करने पर मजबूर होना पड़ रहा है। इस विषम और उबड़ खाबड़ खेत को जिस मैज से समतल किया जा सकता है उसका नाम है 'पूर्वी राजस्थान नहर परियोजना' (ई. आर.सी.पी.)।

पूर्वी राजस्थान में मुख्य रूप से तीन नदियों के बेसिन स्थित हैं– बाणगंगा बेसिन, बनास बेसिन और चंबल बेसिन। बाणगंगा नदी वर्तमान में मानवीय अतिक्रमण से सूखे नाले में तब्दील हो गई है जिससे जयपुर, दौसा और भरतपुर जिलों में पेयजल और कृषि जल की समस्या विकराल रूप ले रही है। इन जिलों का बड़ा भूभाग उपजाऊ भूमि से बंजर भूमि में बदलता जा रहा है। बनास नदी राजसमंद जिले के खमनोर की पहाड़ियों से निकलकर चित्तौड़, भीलवाड़ा, टोंक, जिलों में होती हुई सवाईमाधोपुर में आकर चंबल नदी में मिलती है। इस नदी के जल से टोंक, जयपुर और अजमेर जिले की जल जरूरतों को पूरा किया जा रहा है।

चंबल नदी मध्यप्रदेश के महू जिले में जनापाव पहाड़ी से निकलती है। चंबल नदी की कुल लंबाई 965 किलोमीटर है। चंबल नदी 370 किलोमीटर लंबाई में राजस्थान में बहती हुई राजस्थान और मध्यप्रदेश राज्य की सीमा बनाती है। चंबल नदी पर मध्य प्रदेश में गांधी सागर बांध, राजस्थान में जवाहर सागर (बोराबास,कोटा), राणा प्रताप सागर (चित्तौड़), और कोटा बैराज (कोटा) बांध बने हुए हैं। कोटा बैराज से निकलने के बाद कोटा जिले के नोनेरा गांव में कालीसिंध नदी चंबल नदी में मिल जाती है। सवाई माधोपुर और कोटा जिले की सीमा पर पाली गांव के समीप पार्वती नदी चंबल नदी में आकर मिलती है। इसके बाद बनास और मेज नदी भी सवाईमाधोपुर जिले की खंडार तहसील के समीप चंबल नदी में आकर मिलती हैं। बरसात के दिनों में चंबल की इन सहायक नदियों द्वारा लाया गया जल और चंबल नदी पर चित्तौड़, कोटा जिलों में बने बांधो से जल निकासी के कारण नदी में जलभराव बढ़ जाता है जिससे कोटा, बूंदी, सवाईमाधोपुर, करौली और धौलपुर जिले बाढ़ की चपेट में आ जाते हैं और अतिवृष्टि का अधिशेष जल जान और माल की हानि करता हुआ राज्य से व्यर्थ बह कर चला जाता है। इसी समय में अलवर, दौसा, करौली-सवाई माधोपुर जिलों का उत्तरी भाग और भरतपुर जिले कम वर्षा के कारण सूखे की मार झेल रहे होते हैं। चंबल नदी के इस व्यर्थ बहे अधिषेश जल का विवेकपूर्ण उपयोग कर पूर्वी राजस्थान के जिलों में पूर्वी राजस्थान नहर परियोजना द्वारा सिंचाई और पेयजल की किल्लत को दूर किया जा सकता है साथ ही अधिशेष जल के समुचित उपयोग से कोटा, बूंदी, करौली, धौलपुर जिलों को बाढ़ के खतरों से राहत देकर जन और धन हानि होने से बचाया जा सकता है।

इ.आर.सी.पी. से राजस्थान के 13 जिलों में पीने का पानी और 26 विभिन्न बड़ी एवं मध्यम परियोजनाओं के माध्यम से आठ लाख हेक्टेयर भूमि की सिंचाई हेतु जल उपलब्ध कराया जा सकेगा। इस परियोजना के माध्यम से दिल्ली-मुंबई औद्योगिक गलियारे को भी पानी की आपूर्ति की जाएगी व साथ ही इस क्षेत्र में बाढ़ एवं सूखे की स्थिति का समाधान भी किया जा सकेगा।

राजस्थान क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य है इसका भौगोलिक क्षेत्रफल 52 लाख हेक्टेयर है। यह पूरे देश के क्षेत्रफल का 10.4 प्रतिशत है। किंतु राज्य में भारत के कुल सतही जल का मात्र 1.16 प्रतिशत जल व भूजल का 1.72 प्रतिशत जल ही उपयोग के लिए उपलब्ध है। राजस्थान के सभी जल निकायों से मात्र चंबल नदी के बेसिन में ही अधिशेष जल उपलब्ध रहता है। किंतु राज्य इस जल का सीधे उपयोग नहीं कर सकता क्योंकि कोटा बैराज के आसपास का क्षेत्र मगरमच्छ अभ्यारण के रूप में घोषित है।

ई आर सी पी से राज्य के लगभग 60 प्रतिशत क्षेत्रफल को सिंचाई व 20 प्रतिशत आबादी को पीने के पानी की आपूर्ति हो सकेगी। चंबल का पानी आएगा और उनकी प्यास बुझाएगा की सोच रखने वाली पूर्वी राजस्थान की जनता को पूर्वी राजस्थान नहर परियोजना वरदान साबित होगी। पूर्वी राजस्थान की खुशहाली के लिए राज्य और केंद्र सरकार के बीच चल रही जल राजनीति को विराम देकर राज्य की प्यासी जनता और सूखी जमीन को अभिशप्त होने से बचाना होगा। साथ ही यह भी आवश्यक है कि नदी जल के उपयोग से नदी के पारिस्थितिकी तंत्र के विघटन को रोकने के उपाय करने होंगे। जल संरक्षण और मानव-जल संबंधों को सहभागी बनाकर जलाशयों, नदियों एवं मानव सभ्यता को सूखने से बचाया जा सकेगा। क्योंकि यह अटल सत्य है– पानी खत्म तो सब खत्म।

रहीम दास जी ने भी कहा है–

''रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरे, मोती-मानुष- चून''।

–प्रकाश चंद्र शर्मा,
स्वतंत्र पत्रकार एवं लेखक

सालेड़ा से लक्ष्मीपुरा जाने वाली सड़क बनने के पांच दिन बाद ही टूटने लगी

कानोड़, (निसं)। उदयपुर जिले के भींडर ब्लॉक में सार्वजनिक लोक निर्माण विभाग द्वारा बनाई जा रही सड़के टूटने की लगातार शिकायतें मिल रही है , लेकिन विभाग अधिकारी की उदासीनता के चलते संबंधित ठेकेदारों के खिलाफ कोई कार्रवाई अमल में नहीं लाई जा रही जिससे उनके हौसले बुलंद है। ऐसी ही एक सड़क का निर्माण बीते कुछ दिनों पूर्व सार्वजनिक लोक निर्माण विभाग ने भींडर ब्लॉक के सालेड़ा से लक्ष्मीपुरा गांव जाने वाली करोड़ों की सड़क का किया गया। ग्रामीणों ने शिकायत की है कि सड़क बनने की पांच दिन बाद ही टूटने लगी है तो कुछ जगह पर धस चुकी है सड़क पर दरारें होने लगी है। मामला उठने के बाद विभाग के अधिकारी भी इस सड़क को निर्माणाधीन बता रहे हैं, ग्रामीणों ने बताया कि ठेकेदार ने सड़क को पूर्ण बताकर निर्माण के संसाधन भी मौके से हटा दिए हैं।

- **ग्रामीणों ने जताया विरोध, बोले बरसात तक भी नहीं टिकेगी सड़क**
- **सार्वजनिक लोक निर्माण विभाग ने करोड़ों की लागत से सड़क का निर्माण कराया था**
- **ग्रामीणों ने शिकायत की है कि सड़क बनने की पांच दिन बाद ही टूटने लगी है तो कुछ जगह पर धंस चुकी है दरारें होने लगी है**

सालेड़ा से लक्ष्मीपुरा गांव जाने वाली बनी हुई सड़क कई जगह पर किनारों के पास से धंस गई है।

स्थानीय युवा अशोक जोशी, प्रकाश जोशी, अनिल वैष्णव, रोहित जणवा, अशोक जणवा, राजू जणवा, दुर्गेश जणवा, मुकेश सालवी ने बताया कि सड़क में गुणवत्ता युक्त सामग्री का इस्तेमाल विभाग में नहीं किया ऐसे में यह सड़क बरसात से पहले टूट जाएगी जिससे ग्रामीणों को फिर से उसी हालत में रहने को मजबूर होना पड़ेगा और विभाग इस सड़क पर पेचवर्क शुरू कर देगा। युवाओं ने बताया कि भींडर से डूंगला को जोड़ने वाली इस निर्माण की लंबे समय से मांग की जा रही थी। बताया कि सड़क निर्माण में विभाग ने करीब 1 करोड़ 10 लाख रुपए खर्च किए हैं।

नई सड़क पर पैच वर्क करना सड़क निर्माण की गुणवत्ता पर सवाल के साथ ही विभाग व संबंधित ठेकेदार की मिलीभगत के आरोप लग रहे हैं। इसी तरह बीते कुछ समय पहले निकट ग्राम पंचायत अकोला क्षेत्र में करोड़ों की लागत से बनी सड़कें भी समयावधि से पूर्व ही बदहाल हो गई लेकिन शिकायत के बावजूद भी विभाग के जिम्मेदार अधिकारियों ने ठेकेदार के विरुद्ध कोई कार्रवाई नहीं की। आज भी हालात जस के तस बने हैं। ग्राम पंचायत पीथलपुरा में बनी सड़क भी समय अवधि से पहले टूट गई और कई जगह पर पैच वर्क शुरू हो चुका है। विभाग द्वारा भींडर ब्लॉक में बनाई गई अधिकतर डामर सड़कों की हालत दयनीय हो चले हैं। और जिम्मेदार जनप्रतिनिधियों का भी इस ओर कोई ध्यान नहीं है।

सड़क के दोनों छोर पर कई जगह पर ठेकेदार ने फुटपाथ की जगह नहीं बनाई है ऐसे में सड़क के नीचे उतरते ही वाहन चालक खाई में गिरने का खतरा बना हुआ है , तो वही ठेकेदार सड़क के साइड में खाई बना कर वहीं से कच्ची मिट्टी लेकर साइडे भर रहा है, जिससे भी पशुओं के गिरने व किसी हादसे का खतरा बना हुआ है। जबकि विभाग को सड़क की साइडे भरने के लिए अनंत्र से कंक्रीट वाली मिट्टी लानी थी, लेकिन ठेकेदार पैसे बचाने के चक्कर में ऐसा कर रहा है जिस पर विभाग अधिकारियों का कोई ध्यान नहीं है। बरसात के दिनों में सड़क धंसने का खतरा खतरा भी बना हुआ है वहीं वाहन चालक को सड़क में साइड लेने के लिए नीचे उतरना पड़ेगा। ऐसे में कच्ची मिट्टी से भरी जा रही साइडे परेशानी बनेगी जिसका खामियाजा सड़क से गुजरने वाले आम लोगों को भुगतना पड़ेगा ।

राजकुमार मीणा, सहायक अभियंता पीडब्ल्यूडी विभाग भींडर ने बताया कि सड़क का काम चल रहा है, कच्ची मिट्टी से साइडे भरी जा रही है तो गलत है, मैं छुट्टी पर हूं आने के बाद दिखवाता हूं।

तेंदुआ के शिकार के मामले में ए.टी.एस. और एस.ओ.जी. से जांच की मांग

भीलवाड़ा, (निसं)। वन्यजीव अपराध नियंत्रण ब्यूरो के पूर्व विशेष अधिकारी एवं पीपल फॉर एनिमल्स के प्रदेश प्रभारी बाबूलाल जाजू ने मेवाड़ के जंगलों में शिकारियों के समूह द्वारा 40 से अधिक तेंदुए का शिकार कर उनकी खाले बेचने के मामले में एटीएस और एसओजी के अधिकारियों से जांच कराने की मांग की है। जाजू ने आशंका जाहिर की है कि तेंदुआ के शिकारियों के तार निश्चित रूप से अंतर्राष्ट्रीय वन्यजीव तस्करों से जुड़े हुए हैं।

जाजू ने कहा कि विभागीय अधिकारियों की मिलीभगत के बिना तेंदुए का शिकार संभव नहीं है, यदि मामले की गंभीरता से जांच कराई जाती है तो निश्चित रूप से और भी तस्करी के मामले सामने आएंगे। उन्होंने मुख्यमंत्री गहलोत से एटीएस और एसओजी को मामले की जांच हेतु नियुक्त करने की मांग करते हुए घटना के दौरान पदस्थापित संबंधित वन अधिकारी के निलंबन की मांग की। जाजू ने कहा कि स्थानीय वन्यजीव विभाग के लोग हाथ पर हाथ धरे देखते रहे और शिकारी एक के बाद एक शिकार की घटना को अंजाम देते रहे यह बड़ा शर्मनाक है। तेंदुए के शिकारियों को एटीएस और एसओजी ने पकड़ा है तो जांच भी इन्हें से कराई जानी चाहिए क्योंकि वन विभाग के अधिकारियों से जांच करवाने से मिलीभगत की संभावना है। पूर्व में भी पैंथर के नाखून पकड़े गए थे जिसे भी वाइल्डलाइफ क्राईम कंट्रोल ब्यूरो के कार्मिकों ने पकड़ा था। उल्लेखनीय है कि आए दिन वन्यजीवों के शरीर के अंगों नाखून खाल इत्यादि बेचने की घटनाएं सामने आ रही है बावजूद उसके वन विभाग द्वारा शिकारियों के विरुद्ध कोई ठोस कदम नहीं उठाना मिलीभगत दर्शाता है।

- **शिकार में विभागीय अधिकारियों की मिलीभगत का लगाया आरोप**
- **तेंदुआ के शिकारियों के तार अंतर्राष्ट्रीय वन्यजीव तस्करों से जुड़े होने की आशंका जताई**

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 1 मई, 2023

वैशाख मास, शुक्ल पक्ष, एकादशी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2080, पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र दिन 5:51 तक, धुव्र योग दिन 11:43 तक, वणिज करण प्रात: 9:23 तक, चन्द्रमा रात्रि 12:21 से कन्या राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मेष, चन्द्रमा-सिंह, मंगल-मिथुन, बुध-मेष, गुरू-मेष, शुक्र-वृष, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

रवियोग सांय 5:51 पर समाप्त होगा। दुग्ध योग सूर्योदय से रात्रि 10:10 तक है। आज मोहिनी एकादशी, लक्ष्मी नारायण एकादशी, श्री हितहरिवां महाप्रभु जयन्ती है।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 7:31 तक, शुभ 9:09 से 10:47 तक, चर 2:03 से 3:40 तक, लाभ-अमृत 3:40 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:00 से 8:30 तक। सूर्योदय 5:52, सूर्यास्त 6:55

मेष

परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में सोच-विचार हो सकता है। व्यक्तिगत प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

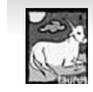

वृष

घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें।

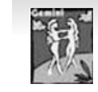

मिथुन

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

कर्क

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी।

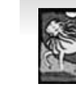

सिंह

मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेगी। शुभ कार्यों के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है।

कन्या

आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। धन हानि हो सकती है। अनावश्यक धन खर्च होगा। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

तुला

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। महत्वपूर्ण कार्यों में प्रगति होगी। नवीन कार्यों में सफलता से मनोबल बढ़ेगा।

वृश्चिक

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

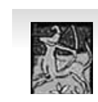

धनु

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है।

मकर

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। नवीन कार्यों टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

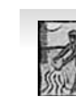

कुंभ

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

मीन

विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। घर-परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है।